मुन्तख़ब आयाते कु रआनी और उन की मुख़्तसर तफ़्सीर पर मुश्तमिल तालीफ़

आयाते कुरआनी के अन्वार

Aayate Quraani ke Anwar (Hindi)

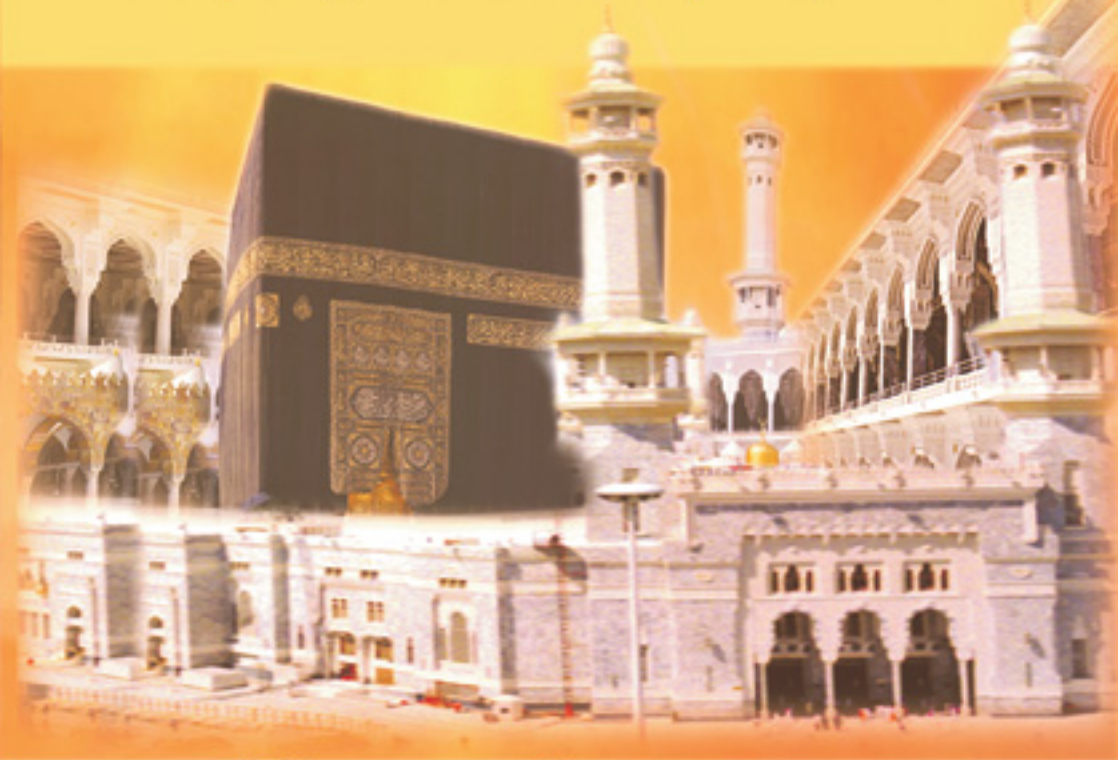

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए इस्लाही कुतुब

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com,

www.dawateislami.net

मुन्तख़ब आयाते कुरआनी और उन की मुख़्तसर तफ़्सीर पर मुश्तमिल तालीफ़

आयाते कुरआनी के अन्वार

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ الک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : आयाते कुरआनी के अन्वार

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब) (दा'वते इस्लामी)

सिने तबाअत : मुहर्रमुल हराम सिने 1430 हिजरी

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमद आबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें

मुम्बई : 19,20 मुहम्मद अली बिल्डिंग, मुहम्मद अली रोड,
फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामेअ मस्जिद
फ़ोन : 011-23284560

कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा, नज़्द गुर्बत पार्क,यूपी, फ़ोन : 09415982471

नागपुर : (C/0) जामिअतुल मदीना,मुहम्मद अली सराय रोड, कमाल शााहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा
फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ : 19 / 216 फलाहे दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"आयाते कुरआनी के अन्वार" के 16 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "16 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : " نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ " या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़-बरानी, अल ह़दीस : 5942, जि. 6, स. 185)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द (2) सलात और (3) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। (8) कुर्आनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (13) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (14) दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करूंगा। (15) म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए इस का कार्ड भी जम्अ़ करवाया करूंगा। (16) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र–ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَه

الحمد لله علٰی اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु–तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़–लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब

(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

“ **अल मदीनतुल इल्मिय्या**” की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़्रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह्क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “**दा'वते इस्लामी**” की तमाम मजालिस ब शुमूल “**अल मदीनतुल इल्मिय्या**” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने इन्सानों की हिदायत के लिये दुन्या में अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए और सब से आख़िर में नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हादी बना कर भेजा। जिस त़रह़ हमारे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया में अफ़्ज़ल हैं यूंही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली किताब "कुरआने मजीद" भी तमाम कुतुबे समाविया में अफ़्ज़ल है। येह किताब बन्दों की हिदायत का सर चश्मा है अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़ गारों को नसीह़त है। (पारह : 4, आले इ़मरान : 138)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज दा'वते इस्लामी 30 से ज़ाइद शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से दीगर शो'बाजात के साथ साथ ता'लीमी इदारों म-सलन दीनी मदारिस, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और यूनिवर्सिटीज़ के असातिज़ा व त़-लबा को **मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से रू शनास करवाने के लिये **"मजलिस बराए शो'बए ता'लीम"** के तह़्त म-दनी काम हो रहा है। बे शुमार तु-लबा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिरकत करते हैं नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते रहते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मु-तअ़द्दद दुन्यवी उ़लूम के दिलदादा बे अ़मल त़-लबा, नमाज़ी और

सुन्नतों के आ़दी हो गए। स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के तु-लबा, असातिज़ा और दीगर अ़-मले को ज़रूरियाते दीन से रू शनास करवाने के लिये अपनी नौइय्यत का मुन्फ़रिद "**फ़ैज़ाने क़ुरआनो ह़दीस कोर्स**" भी शुरूअ़ किया गया है, इस्लामी बहनों में भी येह कोर्स जारी है। ज़ेरे नज़र किताब "**आयाते क़ुरआनी के अन्वार**" को बिल ख़ुसूस इसी कोर्स के लिये तरतीब दिया गया है लेकिन दीगर इस्लामी भाइयों के लिये भी इस का मुता़-लआ़ यक़ीनन मुफ़ीद है।

इस किताब का उस्लूब कुछ यूं है :

(1) मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर तीस आयाते क़ुरआनिया का इन्तिख़ाब किया गया है।

(2) तर-जमए क़ुरआन के लिये उर्दू तराजिम में से दुरुस्त तरीन तरजमा या'नी इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रत मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमा "**कन्ज़ुल ईमान**" का इन्तिख़ाब किया गया है।

(3) आयत की तफ़्सीर "**नूरुल इरफ़ान**" अज़ मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عليه رَحْمَةُ اللهِ القوی और "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" अज़ सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नईमुद्दीन मुराद आबादी عليه رحمة الله الهادی से ली गई है। अपनी त़रफ़ से कोई इज़ाफ़ा नहीं किया गया।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

(दा'वते इस्लामी)

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
1	नेकी की दा'वत का बयान	9	19	मुरतद का बयान	38
2	नमाज़ की अहम्मिय्यत	10	20	शुक्र का बयान	40
3	इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत	11	21	काम्याबी का राज़	41
4	तबुर्रकात के फ़ज़ाइल	13	22	करामाते औलिया	43
5	हुक़ूक़े वालिदैन	15	23	ईसाले सवाब का बयान	45
6	सलाम करने का हुक्म	17	24	पर्दे की अहम्मिय्यत	47
7	इस्तिआ़नत बा'दे वफ़ात	19	25	ज़रूरते ह़दीस	48
8	ज़िना की हुरमत का बयान	21	26	ग़ुस्सा पीना	49
9	ज़कात की अहम्मिय्यत	22	27	हुरमते शराब	50
10	ज़ौजा से नेक सुलूक	23	28	बुरी सोह़बत से बचने का हुक्म	51
11	बैअ़त की अहम्मिय्यत	24	29	बुरे नाम लेने की मुमा-न-अ़त	52
12	यादगार मनाना	25	30	कुफ़्फ़ार से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ का हुक्म	54
13	अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है	26		म-दनी माह़ोल अपना लीजिये	56
14	तक़्लीदे आइम्मा ज़रूरी है	27		अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की	60
15	सूद की हुरमत	29		कुतुब का तआ़रुफ़	
16	फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ عَنہ	31			
17	राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करना	34			
18	फ़ज़ीलते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ عَنہ	36			

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۙ

(1) नेकी की दा'वत का बयान

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ط

(पारह : 4, आले इ़मरान : 110)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में(1) जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो (2) और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

तफ़्सीर :

(1) ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल है। बनी इस्राईल का आ़-लमीन से अफ़्ज़ल होना उस वक़्त ही था। मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत का अफ़्ज़ल होना दाइमी है जैसा कि كُنْتُمْ से मा'लूम हुवा। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत तमाम आ़लम की उस्ताज़ है।

(2) इस से मा'लूम हुवा कि हर मुसल्मान मुबल्लिग़ होना चाहिये। जो मस्अला मा'लूम हो दूसरे को बताए और खुद उस की अपने अ़मल से तब्लीग़ करे। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर का मानना अल्लाह का मानना है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मुन्किर रब عَزَّوَجَلَّ का मुन्किर है। इस लिये फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(2) नमाज़ की अहम्मिय्यत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَارۡکَعُوۡا مَعَ الرّٰکِعِیۡنَ ۝

(पारह : 1, अल ब-क़रह : 43)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और नमाज़ क़ाइम रखो[1] और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।[2]

तफ़्सीर :

(1) इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि नमाज़ ज़कात से अफ़्ज़ल और मुक़द्दम है। दूसरा येह कि नमाज़ पढ़ना कमाल नहीं नमाज़ क़ाइम करना कमाल है। तीसरा येह कि इन्सान को जानी, माली हर क़िस्म की नेकी करनी चाहिये।

(2) इस से मा'लूम हुवा कि जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना बहुत बेहतर है। इशारतन येह भी मा'लूम हुवा कि रुकूअ़ में शामिल हो जाने से रक्अ़त मिल जाती है। जमाअ़त की नमाज़ में अगर एक की क़बूल हो जाए तो सब की क़बूल हो जाती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(3) इल्मे दीन की अहम्मिय्यत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَمَّنْ هُوَقَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًاوَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْارَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕاِنَّمَايَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِo

(पारह : 23, अज़्ज़ुमर : 9)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रें[1] सुजूद में और क़ियाम में। आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए। क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान नसीह़त तो वोही मानते हैं[2] जो अ़क़्ल वाले हैं।[3]

तफ़्सीर :

(1) इस से नमाज़े तहज्जुद की अफ़्ज़लिय्यत मा'लूम हुई। येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ में क़ियाम और सज्दा आ'ला द-रजे के रुक्न हैं येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ी और परहेज़ गार को रब عَزَّوَجَلَّ से ख़ौफ़ ज़रूर चाहिये। अपनी इ़बादत पर नाज़ां न हो, डरता रहे (शाने नुज़ूल) येह आयते करीमा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। बा'ज़ ने फ़रमाया कि उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नमाज़े तहज्जुद के बहुत पाबन्द थे। और उस वक़्त अपने किसी ख़ादिम को बेदार न करते थे। सब काम अपने दस्ते मुबारक से सर अन्जाम देते थे।

(2) मा'लूम हुवा कि आ़बिद से आ़लिमे दीन अफ़्ज़ल है, मलाएका आ़बिद थे और आदम عَلَيْهِ السَّلَام आ़लिम। आ़बिदों को आ़लिम के सामने झुकाया गया, यहां मुत्लक़न इर्शाद हुवा कि आ़लिम ग़ैरे आ़लिम से अफ़्ज़ल है, ग़ैरे आ़लिम ख़्वाह आ़बिद हो या ग़ैरे आ़बिद, बहर ह़ाल उस से आ़लिम अफ़्ज़ल है। ख़याल रहे कि आ़लिम से मुराद आ़लिमे दीन हैं। इन्हीं के फ़ज़ाइल कुरआन व ह़दीस में वारिद हुए। इसी लिये ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात बल्कि तमाम जहान की बीबियों से अफ़्ज़ल हैं कि बड़ी आ़लिमा हैं।

(3) इस में इशारतन फ़रमाया गया कि आ़क़िल वोही है जो अम्बिया की ता'लीम से फ़ाएदा उठाए जो इ़ल्म व अ़क़्ल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम शरीफ़ पर न झुकाए वोह जहालत और बे वुक़ूफ़ी है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(4) तबर्रुकात के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआ़ला ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के क़ौल को ह़िकायतन बयान फ़रमाता है :

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِیْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِیْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِیْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ۝

(पारह : 13, यूसुफ़ : 93)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

मेरा येह कुरता ले जाओ(1) इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी(2) और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ।

तफ़्सीर :

(1) ज़ाहिर येह है कि इस क़मीस से मुराद वोह कुरता है जो आप उस वक़्त पहने हुए थे, और इस इज़ाफ़त से मा'लूम होता है कि कुरते में इस लिये शिफ़ाए अमराज़ की तासीर पैदा हुई, कि इसे मेरे जिस्म से मस हो गया। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं येह क़मीस इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की थी जो मुन्तक़िल होती हुई आप तक पहुंची थी।

(2) इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام रोते रोते नाबीना हो चुके थे, वरना अब आंखें खुल जाने और उन के अंखियारा हो जाने की क्या वजह। दूसरा येह कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात, इन के जिस्म की छूई हुई चीज़ें बीमारियों की शिफ़ा, दाफ़ेए बला मुश्किल कुशा होती हैं, तो ख़ुद वोह ह़ज़रात यक़ीनन दाफ़ेए बला व मुश्किल कुशा हैं। रब तआ़ला ने अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया था,

ٱرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هَٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝ (पारह : 23, ص : 42) अपना पाउं ज़मीन पर रगड़ो, इस से पानी का चश्मा फूटेगा, इसे पियो और गुस्ल करो, शिफ़ा होगी, मदीनए पाक की मिट्टी ख़ाके शिफ़ा है कि इसे हुज़ूर के क़दम से मस नसीब हुवा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(5) हुक़ूक़े वालिदैन

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِیْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

(पारह : 20, अल अ़न्क़बूत : 8)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और हम ने आदमी को ताकीद की[1] अपने मां बाप के साथ भलाई की[2] और अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहरा उसे जिस का तुझे इल्म नहीं[3] तो तू उन का कहा न मान[4] मेरी ही त़रफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे।[5]

तफ़्सीर :

(1) येह आयत ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई। येह अपनी वालिदा के बड़े फ़रमां बरदार थे। जब ईमान लाए तो उन की मां ने कहा कि इस्लाम छोड़ दो वरना मैं खाऊंगी न पियूंगी न साए में बैठूंगी, सूख कर मर जाऊंगी और मेरे ख़ून का वबाल तुझ पर होगा। येह कह कर उस ने खाना पीना छोड़ दिया धूप में बैठ गई, चौबीस घन्टे इसी ह़ाल में रही और बहुत ज़ईफ़ हो गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मां अगर तेरी सो[100] जानें भी हों और एक एक कर के सब क़ुरबान हो जाएं तो भी मैं ईमान न

छोड़ूंगा। जब मां मायूस हो गई तो उस ने खाना पीना शुरूअ़ कर दिया। इस मौक़अ़ पर येह आयते करीमा उतरी।

(2) मा'लूम हुवा कि मां बाप का मादरी पिदरी ह़क़ ज़रूर अदा करे अगर्चे वोह काफ़िर हों। येह भी मा'लूम हुवा कि ह़क़्क़े फ़रज़न्दी हर क़ौम में माना गया। इस लिये وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ फ़रमाया गया। येह भी मा'लूम हुवा कि अह़कामे शर-ई के मुक़ाबले में किसी क़राबत दार का कोई ह़क़ नहीं जैसा कि आयत से मा'लूम हो रहा है। लिहाज़ा मां बाप के कहने पर शर-ई अह़काम नमाज़ वग़ैरा न छोड़े।

(3) शिर्क से मुराद मुत्लक़न कुफ़्र है। या'नी मां बाप के कहने से कुफ़्र न करो, जब कुफ़्र में मां बाप की भी इत़ाअ़त नहीं तो दूसरे का ज़िक्र क्या।

(4) मां बाप के कहने से ईमान न छोड़े न फ़र्ज़ इ़बादत। नफ़्ल इ़बादत मां के मन्अ़ पर छोड़े। ह़ज्जे नफ़्ल के लिये सफ़र बिग़ैर मां बाप की इजाज़त के नहीं कर सकता। इस से मा'लूम हुवा कि ईमान में तक़्लीद जाइज़ नहीं।

(5) येह आयत पिछली आयत की दलील है कि चूंकि तुम्हें रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ही रुजूअ़ करना है लिहाज़ा तुम्हें लाज़िम है कि किसी को राज़ी करने के लिये उसे नाराज़ न करो। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(6) सलाम करने का हुक्म

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِيْبًا0

(पारह : 5, अन्निसाअ : 86)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो[1] बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हि़साब लेने वाला है।[2]

तफ़्सीर :

(1) मा'लूम हुवा कि सलाम का जवाब देना फ़र्ज़ है। लतीफ़ा : बा'ज़ सुन्नतों का सवाब फ़र्ज़ से ज़ियादा है सलाम सुन्नत है और जवाबे सलाम फ़र्ज़ है। मगर सवाब सलाम करने का ज़ियादा है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْه وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर जगह से हमारे सलाम सुनते हैं और जवाब देते हैं। क्यूं कि हर नमाज़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْه وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया जाता है और जवाब देना फ़र्ज़ है। जो जवाब न दे सके उसे सलाम करना मन्अ़। जैसे सोने वाला या इस्तिन्जा करने वाला वग़ैरा। اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ के जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَام وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहना बेहतर जवाब है और सिर्फ़ कहना रद्दे जवाब है। पहला بِاَحْسَنَ مِنْهَا से मुराद है और दूसरा رُدُّوْهَا से मुराद है। अच्छा जवाब देना बेहतर है। रद्दे सलाम फ़र्ज़ लिहाज़ा فَحَيُّوْا अम्रे इस्तिह़बाबी और رُدُّوْهَا अम्रे वुजूब के लिये।

(2) सलाम के मसाइल फ़िक़्ह की किताबों में मुला-ह़ज़ा करें। यहां चन्द मसाइल अ़र्ज़ किये जाते हैं। काफ़िर, मुरतद, मुश्रिक को सलाम करना ह़राम है कि वोह बद दुआ़ के मुस्तह़िक़ हैं और सलाम में दुआ़ हैं। जो सलाम न सुने या जवाब न दे सके उसे सलाम करना मन्अ़ है जैसे सोने वाला या नमाज़ पढ़ने या इस्तिन्जा करने वाला। जो मुसल्मान फ़िस्क़ो फ़ुजूर कर रहा हो उसे सलाम करना मक्रूह है जैसे जो गा बजा रहा हो, ताश, शत़रन्ज खेल रहा हो। घर में दाख़िल होते वक़्त अपने बीवी बच्चों को सलाम करो। सुन्नत येह है कि खड़ा बैठे को और सुवार पैदल को सलाम करे। ख़ाली घर में जाओ तो यूं सलाम करो اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे अन्वर हर उम्मती के घर में जल्वा गर होती है (ह़ाज़िरो नाज़िर)। अजनबी जवान औ़रतों को सलाम न करो कि इस में फ़ितने का ख़ौफ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(7) इस्तिआ़नत बा'दे वफ़ात

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ

(पारह : 3, आले इ़मरान : 81)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उन का अ़हद लिया[1] जो मैं तुम को किताब और हि़क्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास[2] वोह रसूल कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए[3] तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना[4] और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना।[5]

तफ़्सीर :

(1) अज़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ता ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام सब से येह अ़हद लिया गया और इसी अ़हद के ज़रीए उन की उम्मतों से भी अ़हद हो गया क्यूं कि उम्मत पैग़म्बर के ताबेअ़ होती है, इमाम का मुआ़हदा सारी क़ौम का मुआ़हदा है।

(2) इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगलों पिछलों सब के पास तशरीफ़ लाए और सारे अगले पिछले हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब ने आ़-लमीन की रह़मत, नज़ीर, बशीर और नबी बनाया। और अगले लोग भी आ़-लमीन में दाख़िल हैं। इस लिये सारे नबियों ने शबे मे'राज हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ पढ़ी, और नमाज़ भी

नमाज़े मुहम्मदी पढ़ी, नमाज़े ईसवी या मूसवी न पढ़ी।

(3) इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि ये अ़हद सिर्फ़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये लिया गया क्यूं कि तमाम कुतुब और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की तस्दीक़ सब से आख़िरी नबी ही कर सकता है। वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही हैं, दूसरा येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी,कोई किताब नहीं आ सकती, क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ मुसद्दिक़ हैं किसी नबी के मुबश्शिर नहीं, तस्दीक़ पिछलों की होती है और बिशारत अगलों की।

(4) अगर्चे सारे नबी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उस दिन ही ईमान ला चुके थे मगर वोह ईमान फ़ित़री था ईमाने शर-ई दुन्या में आ कर इख़्तियार किया जाता है येह ही शर-ई ईमान सवाब व जज़ा का ज़रीआ़ है, जैसे सारे इन्सान मीसाक़ के दिन अल्लाह पर ईमान ला चुके थे मगर उस ईमान की वजह से सब को मोमिन न कहा जाएगा वरना सारे काफ़िर मोमिन होंगे। यहां ईमान से शर-ई ईमान मुराद है।

(5) इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन बा'दे वफ़ात भी मदद करते हैं क्यूं कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से दीने मुहम्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद का अ़हद लिया गया। ह़ालां कि रब عَزَّوَجَلَّ जानता था कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में येह ह़ज़रात वफ़ात पा चुके होंगे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मदद की इस त़रह़ कि शबे मे'राज पचास नमाज़ों की पांच करा दीं, इस त़रह़ अब भी हुज़ूर की मदद अपनी उम्मत पर बराबर जारी है अगर उन की मदद न हो तो हम कोई नेकी नहीं कर सकते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(8) ज़िना की हुरमत का बयान

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

(पारह : 15, बनी इस्राईल : 32)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और बदकारी के पास न जाओ(1) बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह।(2)

तफ़्सीर :

(1) या'नी ज़िना के अस्बाब से भी बचो, लिहाज़ा बद न-ज़री, ग़ैर औ़रत से ख़ल्वत, औ़रत की बे पर्दगी वग़ैरा सब ही ह़राम हैं बुख़ार रोकने के लिये नज़्ला रोको। ता़ऊ़न से बचने के लिये चूहों को हलाक करो, पर्दे की फ़र्ज़िय्यत, गाने बाजे की हुरमत, निगाह नीची रखने का हुक्म येह सब ज़िना से रोकने के लिये है।

(2) इस से मा'लूम हुवा कि ज़िना क़त्ल से बड़ा जुर्म है, क्यूं कि क़त्ल की सज़ा क़त्ल है मगर ज़िना की सज़ा संगसार करना, क्यूं कि ज़िना गुनाह भी है और बे ह़याई भी, और नस्ले इन्सानी का ख़राब करना भी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(9) ज़कात की अहम्मिय्यत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَo

(पारह : 18, अल मुअमिनून : 4)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं ।(1)

तफ़्सीर :

(1) या'नी हमेशा ज़कात दिया करते हैं । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(10) ज़ौजा से नेक सुलूक

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ۝

(पारह : 4, अन्निसाअ : 19)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और उन से अच्छा बरताव करो फिर अगर वोह तुम्हें पसन्द न आएं तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो और अल्लाह उस में बहुत भलाई रखे ।(1)

तफ़्सीर :

(1) या'नी बद ख़ुल्क़ या बद सूरत बीवी को त़लाक़ देने में जल्दी न करो मुम्किन है कि रब तआ़ला उसी बीवी से ऐसी लाइक़ औलाद दे जिस में तुम्हारे लिये बहुत ख़ैर हो जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(11) बैअ़त की अहम्मिय्यत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝

(पारह : 15, बनी इस्राईल : 71)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे(1) तो जो अपना नामा दाहिने हाथ में दिया गया येह लोग अपना नामा पढ़ेंगे(2) और तागे भर उन का ह़क़ न दबाया जाएगा।

तफ़्सीर :

(1) इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह़ को अपना इमाम बना लेना चाहिये, शरीअ़त में तक़्लीद कर के और त़रीक़त में बैअ़त कर के ताकि ह़श्र अच्छों के साथ हो, अगर कोई सालेह़ इमाम न होगा तो उस का इमाम शैत़ान होगा इस आयत में तक़्लीद और बैअ़त, मुरीदी सब का सुबूत है।

(2) इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि क़ियामत में कोई बे पढ़ा न होगा सब लोग तह़रीर पढ़ लिया करेंगे अगर्चे दुन्या में बा'ज़ लोग जाहिल भी थे दूसरा येह कि तमाम लोगों की ज़बान उस दिन अ़-रबी होगी, क्यूं कि नामए आ'माल की तह़रीर अ़-रबी ज़बान में है। लेकिन किसी को तरजमा कराने की ज़रूरत न होगी। बल्कि ह़िसाबे क़ब्र भी अ़-रबी में होगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(12) यादगार मनाना

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ○

(पारह : 11, यूनुस : 58)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत[1] और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें[2] वोह इन के सब धन दौलत से बेहतर है ।[3]

तफ़्सीर :

(1) बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि अल्लाह का फ़ज़्ल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और अल्लाह की रह़मत कुरआने करीम। रब फ़रमाता है : وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا (पारह : 5, अन्निसाअ : 113) और बा'ज़ ने फ़रमाया कि अल्लाह का फ़ज़्ल कुरआन है और रह़मत हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं । रब फ़रमाता है, وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (पारह : 17, अल अम्बियाअ : 107)

(2) मा'लूम हुवा कि कुरआने मजीद के नुज़ूल के महीने या'नी र-मज़ान में और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के महीने या'नी रबीउ़ल अव्वल में ख़ुशी मनाना इबादात करना बेहतर है, क्यूं कि रब की रह़मत मिलने पर ख़ुशी करनी चाहिये और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो रब की बड़ी आ'ला ने'मत हैं, येह ख़ुशी रब की ने'मतों का शुक्रिया है।

(3) या'नी येह ख़ुशी मनाना दुन्या की तमाम ने'मतों से बेहतर है क्यूं कि येह ख़ुशी इबादत है जिस का सवाब बे ह़िसाब है ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(13) अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اَلنَّارُ یُعْرَضُوْنَ عَلَیْهَا غُدُوًّا وَّعَشِیًّا ۚ وَیَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ۝

(पारह : 24, अल मुअमिन : 46)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

आग जिस पर सुब्ह़ व शाम पेश किये जाते हैं(1) और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा(2) फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।(3)

तफ़्सीर :

(1) इस त़रह़ कि उन की क़ब्रों में दोज़ख़ की गरमी तो हर वक़्त ही रहती है मगर आग की पेशी सुब्ह़ व शाम होती रहेगी क़ियामत तक। क़ब्र से मुराद आ़लमे बरज़ख़ है इस से तीन मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है, दूसरे येह कि अ़ज़ाबे क़ब्र जहन्नम में दाख़िल हो कर न होगा बल्कि दूर से दोज़ख़ की गरमी पहुंचा कर। तीसरे येह कि ह़िसाबे क़ब्र सिर्फ़ ईमान का है और ह़िसाबे क़ियामत ईमान व आ'माल दोनों की जांच है इस लिये कि इस आयत में आले फ़िरऔ़न के लिये दो अ़ज़ाबों का ज़िक्र हुवा जहन्नम की आग पर पेश होना क़ियामत से पहले फिर क़ियामत में दोज़ख़ में दाख़िला होना।

(2) उस दिन फ़िरिश्तों को अ़लानिया।

(3) इस से मा'लूम हुवा कि कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाब मुख़्तलिफ़ होंगे सख़्त काफ़िरों का अ़ज़ाब भी सख़्त है हलके काफ़िरों का अ़ज़ाब भी हलका जैसा कि اشد से मा'लूम हुवा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(14) तक़्लीदे आइम्मा ज़रूरी है

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝

(पारह : 5, अन्निसाअ : 115)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द इस के कि ह़क़ रास्ता उस पर खुल चुका(1) और मुसल्मानों की राह से जुदा राह चले(2) हम उसे उस के ह़ाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह है पलटने की।

तफ़्सीर :

(1) इस से मा'लूम हुवा कि जिस को इस्लाम की दा'वत न पहुंची हो उस पर अह़कामे शरइ़य्या लाज़िम नहीं, सिर्फ़ अ़क़ीदए तौह़ीद काफ़ी है क्यूं कि उस ने रसूल عَلَيْهِ السَّلَام की मुख़ा-लफ़त न की नीज़ जो बे इ़ल्मी में गुनाह कर बैठे उस पर मुख़ा-लफ़ते रसूल का गुनाह न होगा। मुख़ा-लफ़ते रसूल जब है कि दीदा दानिस्ता हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी करे। येह भी ख़याल रहे कि मुख़ा-लफ़ते रसूल फ़िल अ़क़ीदा कुफ़्र है और फ़िल अ़मल फ़िस्क़।

(2) मा'लूम हुवा कि तक़्लीद ज़रूरी है कि येह आ़म मुसल्मानों का रास्ता है। इसी त़रह़ ख़त्मे फ़ातिह़ा, मह़फ़िले मीलाद, उ़र्से बुज़ुर्गाने

दीन आ़म्मतुल मुस्लिमीन के अम़ल हैं और मुसल्मान इन्हें अच्छा समझ कर करते हैं । लिहाज़ा येह बेहतर है । रब फ़रमाता है : وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ (पारह : 2, अल ब-क़रह : 143) और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَنْتُمْ شُهَدَاءُ اللّٰهِ فِى الْاَرْضِ और फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُوْنَ حَسَناً فَهُوَ عِنْدَاللّٰهِ حَسَنٌ जिसे मुसल्मान अच्छा समझें वोह अल्लाह के नज़्दीक भी अच्छा है । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(15) सूद की हुरमत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(पारह : 3, अल ब-क़रह : 275)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और अल्लाह ने ह़लाल किया बैअ़ को और ह़राम किया सूद[1] तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका[2] और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है[3] और जो अब ऐसी ह़-र-कत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे ।[4]

तफ़्सीर :

(1) क़र्ज़ पर जो नफ़्अ़ लिया जाए वोह सूद है, ऐसे ही मुत्तह़िदुल जिन्स को ज़ियादती से फ़रोख़्त किया जाए वोह सूद है, जैसे सैर गन्दुम सवा सैर के इ़वज़ बेचना । सूद की बहुत सी सूरतें हैं जो फ़िक़्ह में मज़्कूर हैं ।

(2) इस में इशारतन फ़रमाया गया कि जो शख़्स हुरमते सूद के बा'द भी सूद लेता रहा वोह गुज़श्ता लिये हुए सूद का भी मुजरिम होगा । ह़िल्लते सूद के ज़माने का सूद उस के लिये क़ाबिले मुआ़फ़ी होगा जो अब सूद से बाज़ आ जाए ।

(3) जब चाहे जो चाहे जिस पर चाहे ह़राम फ़रमा दे उस पर ए'तिराज़ नहीं । हां उस के अह़काम की ह़िक्मतें सोचना मन्अ़ नहीं बल्कि सवाब है ।

(4) अगर सूद को ह़लाल जान कर लिया तो काफ़िर हुवा वोह दोज़ख़ में हमेशा रहेगा और अगर ह़राम जान कर लिया तो फ़ासिक़ हुवा बहुत अ़र्सा दोज़ख़ में रहेगा । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(16) फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ

(पारह : 10, अत्तौबह : 40)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

अगर तुम मह़बूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे(1) जब अपने यार से(2) फ़रमाते थे(3) ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है(4) तो अल्लाह ने उस पर अपना सकीना उतारा ।(5)

तफ़्सीर :

(1) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सिद्दीक़ जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार हैं । लफ़्ज़े यारे ग़ार इस आयत से ह़ासिल हुवा । आज भी दिली दोस्त और बा वफ़ा यार को यारे ग़ार कहा जाता है ।

(2) इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सह़ाबिय्यत क़त्ई ईमाने कुरआनी है लिहाज़ा इस का इन्कार कुफ़्र है । दूसरा येह कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का द-रजा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़ा है कि उन्हें

रब عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सानी फ़रमाया। इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने मुसल्ले पर इमाम बनाया। आप चार पुश्त के सह़ाबी है। वालिदैन भी, ख़ुद भी, सारी औलाद भी, औलाद की औलाद भी सह़ाबी। जैसे यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام चार पुश्त के नबी। येह आप की ख़ुसूसिय्यत है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ख़िलाफ़त सिद्दीक़े अक्बर के लिये है। रब तआ़ला इन्हें दूसरा बना चुका फिर इन्हें तीसरा या चौथा करने वाला कौन है। वोह तो क़ब्र में भी दूसरे हैं ह़श्र में भी दूसरे होंगे।

(3) मुझ पर ग़म न खाओ क्यूं कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उस वक़्त अपना ग़म न था ख़ुद तो सांप से कटवा चुके थे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़िदा हो चुके थे अगर अपना ग़म होता तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कन्धे पर उठा कर ग्यारह मील पहाड़ की बुलन्दी पर न चढ़ते अकेले ग़ार में अंधेरे में दाख़िल न होते, सांप से न कटवाते। उन का येह ग़म भी इ़बादत था और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह तस्कीन देना भी इ़बादत। चुनान्चे रब तआ़ला ने इन दोनों हस्तियों को मकड़ी के जाले और कबूतरी के अन्डों के ज़रीए़ बचाया।

(4) मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया था مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ (पारह : 19, अश्शु-अ़राअ : 62) मेरे साथ मेरा रब है या'नी तुम्हारे साथ रब नहीं मेरे साथ है। मगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे साथ है या'नी मेरे साथ भी है और तुम्हारे साथ भी। जिस के साथ रब हो वोह कभी गुमराह नहीं हो सकता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमेशा अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ था और रहा जैसे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ।

(5) मा'लूम हुवा कि सकीना का नुज़ूल सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर हुवा क्यूं कि उस वक़्त बेचैनी उन्ही को थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ल्बे मुबारक तो पहले ही से चैन में था। नीज़ इस से क़रीब में सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ही ज़िक्र हुवा **لصاحبہ** और ज़मीर हत्तल इम्कान क़रीब की तरफ़ रुजूअ़ होती है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़याल था कि काफ़िर ग़ार के मुंह पर आ गए। अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मुत्तलअ़ हो गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुख देंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(17) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करना

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ۝

(पारह : 4, आले इमरान : 92)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे(1) जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो(2) और तुम जो कुछ ख़र्च करो अल्लाह को मा'लूम है ।(3)

तफ़्सीर :

(1) भलाई से मुराद तक़्वा और इत़ाअ़ते इलाही है । या उस की ने'मतें हैं तो पाने से मुराद अव्वलन पाना है ।

(2) इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि सारा माल ख़ैरात न करे । कुछ ख़ैरात करे कुछ ख़र्च के लिये रखे । इस लिये **مما** फ़रमाया । दूसरा येह कि हर माल में से ख़र्च करे इस लिये **ما** को आ़म रखा गया । तीसरा येह कि सिर्फ़ फ़र्ज़ पर किफ़ायत न करे बल्कि स-दक़ए नफ़्ली भी दिया करे इस लिये **تُنْفِقُوْن** को आ़म रखा गया । चौथा येह कि अपनी प्यारी चीज़ अल्लाह तआ़ला की राह में ख़ैरात करे ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शकर की बोरियां ख़रीद कर ख़ैरात करते थे । लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप इन बोरियों की क़ीमत ही क्यूं न ख़ैरात फ़रमा दें । तो फ़रमाया कि, मुझे शकर मरग़ूब है और येह

आयते करीमा तिलावत की । पांचवां येह कि ख़ैरात की क़बूलिय्यत इख़्लास पर मौक़ूफ़ है ज़ियादती और कमी पर मौक़ूफ़ नहीं ।

(3) या'नी रब عَزَّوَجَلَّ येह भी जानता है कि तुम ने क्या माल ख़र्च किया । और येह भी जानता है कि किस निय्यत से ख़र्च किया । लिहाज़ा इख़्लास से ख़ैरात करो । अच्छे माल का ज़िक्र तो पहले फ़रमाया, अच्छी निय्यत का ज़िक्र यहां हुवा । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(18) फ़ज़ीलते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ

(पारह : 2, अल ब-क़रह : 187)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना तुम्हारे लिये ह़लाल हुवा[1] वोह तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास। अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे[2] तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाया और अब उन से सोह़बत करो।[3]

तफ़्सीर :

(1) येह ह़िल्लते क़त़ई है जिस का इन्कार कुफ़्र है कभी मुबाह़ या मुस्तह़ब का इन्कार भी कुफ़्र होता है।

(2) (शाने नुज़ूल) इस्लाम में अव्वलन र-मज़ान की रातों में अपनी बीवी से सोह़बत ह़राम थी। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और दूसरे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से येह फ़े'ल वाक़ेअ़ हो गया। मुक़द्दमा बारगाहे न-बवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पेश हुवा इस पर येह आयत उतरी इस से येह मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों की ख़त़ा छोटों के लिये अ़त़ा

का ज़रीआ़ होती है, आ़लम का ज़ुहूर आदम عَلَيْهِ السَّلَام के गन्दुम खाने के सदक़े से है। हमारी इताअ़तों से उन की ख़ताएं अफ़्ज़ल हैं। ख़याल रहे कि यहां ख़ियानत से मुराद ग़-लती, लग़्ज़िश, ख़ता है। न वोह जो गुनाहे कबीरा है, जैसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़ता को कुरआने मजीद में ज़ुल्म फ़रमाया गया।

(3) इस से एक मस्अला येह मा'लूम हुवा कि रब عَزَّوَجَلَّ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की गुज़श्ता ग़-लती को मुआ़फ़ फ़रमा दिया कोई कफ़्फ़ारा वग़ैरा लाज़िम न फ़रमाया, येह उन की ख़ुसूसिय्यत है। दूसरा येह कि अब जो कोई इन बुज़ुर्गों की इस लग़्ज़िश को बुराई से याद करे वोह सख़्त मुजरिम है, रब عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ी का ए'लान कर चुका तो तुम बिगड़ने वाले कौन। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(19) मुरतद का बयान

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(पारह : 2, अल ब-क़रह : 217)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया[1] दुन्या में और आख़िरत में[2] और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

तफ़्सीर :

(1) मा'लूम हुवा कि इरतिदाद से तमाम नेकियां बरबाद हो जाती हैं अगर कोई ह़ाजी मुरतद हो जाए फिर ईमान लाए तो दोबारा ह़ज करे पहला ह़ज ख़त्म हो चुका। इसी त़रह़ ज़मानए इरतिदाद में जो नेकियां कीं वोह क़बूल नहीं। काफ़िरे अस्ली की नेकियां बा'दे क़बूले इस्लाम क़ाबिले सवाब हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि मुरतद की तौबा क़बूल है। अगर्चे वोह अस्ली काफ़िर से सख़्त तर है।

(2) मुरतद के आ'माल दुन्या में तो इस त़रह़ बरबाद होते हैं कि औ़रत निकाह़ से निकल जाती है वोह अपने किसी रिश्तेदार की मीरास नहीं पाता, उस का माल ग़नीमत बनाया जा सकता है उस के

क़त्ल का हुक्म है, उस के साथ महब्बत के सारे तअ़ल्लुक़ात ह़राम हो जाते हैं। उस की किसी त़रह़ की मदद करना जाइज़ नहीं और आख़िरत में इस त़रह़ बरबाद होते हैं कि उन की कोई जज़ा नहीं। मा'लूम हुवा कि ख़ातिमे का ए'तिबार है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मुसल्मानों को ख़ातिमा बिलख़ैर नसीब फ़रमाए। आमीन (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(20) शुक्र का बयान

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝

(पारह : 2, अल ब-क़रह : 152)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा[1] और मेरा ह़क़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो।[2]

तफ़्सीर :

(1) या'नी मुझे ज़बान से दिल से, आ'ज़ा से याद करो। लिहाज़ा इस में तमाम इबादात आ गईं फिर तुम मुझे अपनी ज़िन्दगी में याद करो मैं तुम्हें बा'दे मौत (या'नी तुम्हारी मौत के बा'द) याद करूंगा कि दुन्या तुम पर फ़िदा होगी, जैसा कि औलियाउल्लाह की क़ुबूर पर रोनक़ देखने से मा'लूम होता है, या तुम मुझे गुनाह कर के तौबा से याद करो मैं तुम्हें मग़्फ़िरत से याद करूंगा। तुम मुझे ख़ल्वत या जल्वत में याद करो मैं तुम्हें इसी त़रह़ याद करूंगा। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है ग़रज़े कि येह आयत बहुत जामेअ़ है।

(2) जब कुफ़्र शुक्र के मुक़ाबिल हो तो इस का मा'ना ना शुक्री है और जब इस्लाम या ईमान के मुक़ाबिल हो तो इस के मा'ना बे ईमानी है। यहां ना शुक्री मुराद है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(21) काम्याबी का राज़

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ

(पारह : 18, अल मुअमिनून : 1 ता 6)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले(1) जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं(2) और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते(3) और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं(4) और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं(5) मगर अपनी बीबियों या शर-ई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं(6) कि इन पर कोई मलामत नहीं।

तफ़्सीर :

(1) इस त़रह़ कि जन्नत और वहां की ने'मतों के मुस्तह़िक़ हुए। दीदारे इलाही के ह़क़दार बने, या दुन्या में मक़्बूलुद्दुआ़ हुए और उन की ज़िन्दगी काम्याब हुई। मा'लूम हुवा कि ईमान और तक़्वा दोनों जहान की काम्याबियों का ज़रीआ़ है। इस से दुआ़एं क़बूल, आफ़ात

दूर, मुरादें ह़ासिल होती हैं। रब फ़रमाता है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا الخ

(2) इस त़रह़ कि नमाज़ की ह़ालत में उन के दिलों में रब का ख़ौफ़, आ'ज़ा में सुकून होता है, नज़र अपने मक़ाम पर क़ाइम होती है, नमाज़ में अ़बस काम नहीं करते। ध्यान नमाज़ में रहता है, नमाज़ क़ाइम करने के येह ही मा'ना हैं। अल्लाह तआ़ला नसीब करे।

(3) या'नी ऐसा काम नहीं करते जिस में दीनी या दुन्यावी नफ़्अ़ न हो, ख़याल रहे कि मुज़िर काम बात़िल है और बे फ़ाएदा काम लग़्व, तक़्वा के लिये इन दोनों से बचे।

(4) या'नी हमेशा ज़कात दिया करते हैं।

(5) इस त़रह़ कि ज़िना और लवाज़िमे ज़िना से बचते हैं ह़त्ता कि ग़ैर का सित्र देखते नहीं।

(6) इस से मा'लूम हुवा कि मोमिन अपनी शर-ई लौंडियों से सोह़बत कर सकता है। मगर मौलाह औ़रत अपने ग़ुलाम से सोह़बत नहीं करा सकती।

(22) करामाते औलिया

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(पारह : 3, आले इमरान : 37)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

जब ज़-करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते। कहा ऐ मरयम येह तेरे पास कहां से आया ? बोलीं, वोह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे।[1]

तफ़्सीर :

(1) इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि करामते वली बरहक़ है, क्यूं कि ह़ज़रते मरयम को बे मौसिम ग़ैबी फल मिलना उन की करामत थी। दूसरे येह की बा'ज़ बन्दे मादर ज़ाद वली होते हैं, विलायत अ़मल पर मौक़ूफ़ नहीं। देखो ह़ज़रते मरयम लड़क पन में वलिय्या थीं, तीसरे येह कि वली को अल्लाह तआ़ला इल्मे लदुन्नी और अ़क़्ले कामिल अ़ता फ़रमाता है कि ह़ज़रते मरयम ने ह़ज़रते ज़-करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام के सुवाल का जवाब ऐसा ईमान अफ़रोज़ दिया कि سُبْحٰنَ اللّٰه, चौथे येह कि बा'ज़ अल्लाह वालों के लिये जन्नती मेवे आए हैं। ह़ज़रते मरयम को येह फल जन्नत से मिलते थे। पांचवें येह कि ह़ज़रते मरयम की परवरिश जन्नती मेवों से हुई न कि मां के दूध या दुन्यावी

ग़िज़ाओं से (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान) क्यूं कि वालिदए मोह़-त-रमा तो उन के पैदा होते ही अह़बार के सिपुर्द कर गई थीं, और साबित नहीं होता कि आप के लिये कोई दाई मुक़र्रर की गई हो। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(23) ईसाले सवाब का बयान

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۝

(पारह : 11, अत्तौबह : 99)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और कुछ गाउं वाले वोह हैं जो(1) अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखते हैं(2) और जो ख़र्च करें उसे अल्लाह की नज़्दीकियों और रसूल से दुआ़एं लेने का ज़रीआ़ समझें(3) हां हां वोह उन के लिये बाइ़से क़ुर्ब है अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रह़मत में दाख़िल करेगा(4) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

तफ़्सीर :

(1) इस आयत में या क़बीला मुज़्निया वाले मुराद हैं, या अस्लम व ग़िफ़ार और जुहैना के लोग, इस से मा'लूम हुवा कि अगर अल्लाह का करम शामिले ह़ाल हो तो दूर वाले फ़ैज़ पा लेते हैं, वरना नज़्दीक वाले भी मह़रूम रहते हैं। अबू जह्ल मक्का में रह कर काफ़िर रहा और येह लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर रहते हुए भी मोमिन, मुत्तक़ी, परहेज़ गार हुए سُبْحٰنَ اللّٰه वहां क़ुर्बे रूह़ानी क़बूल है।

(2) इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि अल्लाह और क़ियामत का मानने वाला वोही है जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान

लाए क्यूं कि दूसरे गंवार भी अल्लाह तआ़ला और क़ियामत को मानते थे मगर उन्हें मुन्किरीन में शामिल किया गया। दूसरे येह कि तमाम आ'माल पर ईमान मुक़द्दम है, ईमान जड़ है और नेक आ'माल शाख़ें। ख़याल रहे कि अल्लाह और क़ियामत के ईमान में तमाम ईमानियात दाख़िल हैं। लिहाज़ा क़ियामत, जन्नत, दोज़ख़, ह़श्र, नश्र सब ही पर ईमान ज़रूरी है जैसे हम कहते हैं नमाज़ में अल ह़म्द पढ़ना ज़रूरी है या'नी पूरी सूरए फ़ातिह़ा।

(3) इस से मा'लूम हुवा कि नेक आ'माल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी की निय्यत करनी शिर्क नहीं बल्कि क़बूलिय्यत की दलील है रब फ़रमाता है : وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ : (पारह : 11, अत्तौबह : 62) सह़ाबा स-दक़ात में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा की निय्यत करते थे। इस में ईसाले सवाब और फ़ातिह़ा का सुबूत है या'नी नेक अ़मल पर अ़र्ज़ करनी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के मु-तअ़ल्लिक़ दुआ़ फ़रमाएं कि मौला क़बूल फ़रमा कर उन लोगों को सवाब दे। फ़ातिह़ा में येही कहा जाता है कि इस स-दक़े वग़ैरा का सवाब फ़ुलां को दे। अब भी चाहिये कि स-दक़ा लेने वाला देने वाले को दुआ़ए ख़ैर दे।

(4) इस आयत में उन के स-दक़ात की क़बूलिय्यत की ख़बर है। मा'लूम हुवा कि कोई मुसल्मान सह़ाबा के द-रजे को नहीं पहुंच सकता। उन की नेकियों की रसीद अ़र्शे आ'ज़म से आ चुकी हमारी किसी नेकी की क़बूलिय्यत की ख़बर नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(24) पर्दे की अहम्मिय्यत

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

(पारह : 18, अन्नूर : 30)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें। (1) और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।(2) येह उन के लिये बहुत सुथरा है।(3) बेशक अल्लाह को उन के कामों की ख़बर है।

तफ़्सीर :

(1) इस त़रह़ कि जिन चीज़ों का देखना जाइज़ नहीं उन्हें न देखें ख़याल रहे कि अम्रद लड़के को शहवत से देखना ह़राम है इसी त़रह़ अज्नबिया का बदन देखना ह़राम। अलबत्ता त़बीब मरज़ की जगह को और जिस औ़रत से निकाह़ करना हो उसे छुप कर देखना जाइज़ है।

(2) इस त़रह़ कि ज़िना और ज़िना के अस्बाब से बचें कि सिवा अपनी ज़ौजा और मम्लूका लौंडी के, किसी पर सित्र ज़ाहिर न होने दें।

(3) या'नी नीची निगाह रखना अस्बाबे ज़िना से बचना तोहमत के मक़ाम से भागना बहुत बेहतर है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(25) ज़रूरते ह़दीस

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

(पारह : 28, अल ह़श्र : 7)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो(1) और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो और अल्लाह से डरो(2) बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।

तफ़्सीर :

(1) ग़नीमत में से क्यूं कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है या येह मा'ना हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें जो हुक्म दें उस का इत्तिबाअ़ करो क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ हर अम्र में वाजिब है।

(2) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ा-लफ़त न करो इन के ता'मीले इर्शाद में सुस्ती न करो। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(26) ग़ुस्सा पीना

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

(पारह : 4, आले इ़मरान : 134)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले(1) और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं ।(2)

तफ़्सीर :

(1) ख़याल रहे कि मुआ़फ़ी और दर गुज़र अपने हुक़ूक़ में की जा सकती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुजरिम को मुआ़फ़ नहीं किया जा सकता । मुरतद को क़त्ल किया जाएगा और चोर के ज़रूर हाथ कटेंगे । इस आयत का येही मक़्सद है ।

(2) फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ फ़रमाते हैं कि एह़सान के इ़वज़ एह़सान करना बदला है और बुराई के इ़वज़ बुराई करना मजाज़ात और सज़ा है । बुराई के इ़वज़ भलाई करना करम व जूद है और भलाई के इ़वज़ बुराई करना ख़बासत है । इस आयत में करम व जूद का ज़िक्र है उन्हें मोह़सिन फ़रमाया गया है । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(27) हुरमते शराब

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ز وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ

(पारह : 2, अल ब-क़रह : 219)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं(1) तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी(2) और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है।(3)

तफ़्सीर :

(1) जूए को मैसिर इस लिये कहते हैं कि इस में हारने वाले का माल आसानी से ह़ासिल हो जाता है। जिस चीज़ में माल का जाना आना शर्ते ग़ैर मा'लूम पर मौक़ूफ़ हो तो वोह जूआ है लिहाज़ा इस मा'ना की मुअ़म्मा बाज़ी ख़ालिस जूआ है। इसी त़रह़ सट्टा और वोह तिजारतें जिन में माली हार जीत है सब ह़राम हैं। ऐसे ही ताश, शत़रन्ज वग़ैरा।

(2) कि कुफ़्फ़ार इन के ज़रीए़ से कुछ रुपिया कमा लेते हैं।

(3) इस में इशारतन दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि येह आयत शराब के ह़राम होने के बा'द नाज़िल हुई वरना इसे गुनाह न कहा जाता। दूसरा येह कि शराब नोशी का कबीरा गुनाह होना इज़ाफ़ी या'नी नफ़्अ़ से गुनाह ज़ियादा वरना शराब नोशी व जूआ गुनाहे सग़ीरा है जो हमेशगी से कबीरा बन जाते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(28) बुरी सोह़बत से बचने का हुक्म

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(पारह : 7, अल अन्आ़म : 68)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और जो कहीं तुझे शैत़ान भुला दे[1] तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।[2]

तफ़्सीर :

(1) या'नी अगर भूल कर तुम कुफ़्फ़ार के जल्सों में चले जाओ तो याद आते ही वहां से हट जाओ फिर न ठहरो ।

(2) इस से मा'लूम हुवा कि बुरी सोह़बत से बचना निहायत ज़रूरी है। बुरा यार बुरे सांप से बदतर है कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

(29) बुरे नाम लेने की मुमा-न-अ़त

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الاِسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○

(पारह : 26, अल हु़जुरात : 11)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो(1) क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना(2) और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं ।(3)

तफ़्सीर :

(1) इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक तो येह कि मुसल्मान को गधा, कुत्ता, सुवर वगै़रा न कहो । दूसरा येह कि जिस गुनहगार ने अपने गुनाह से तौबा कर ली हो फिर उसे उस गुनाह का त़ा'ना न दो । तीसरा येह कि मुसल्मान को ऐसे लक़ब से न पुकारो जो उसे ना गवार हो अगर्चे वोह ऐ़ब उस में मौजूद हो । ओ काने, ओ टेनी, ओ लंगड़े, अन्धे कह कर न पुकारो अगर्चे येह बीमारियां उस में हों । चौथा येह कि जो लक़ब नाम की त़रह़ बन गए हों कि अब उसे तक्लीफ़ न होती हो तो इन अल्क़ाब से पुकारना मन्अ़ नहीं । जैसे आ'मश, आ'रज वगै़रा ।

(2) या'नी ऐसी ह़-र-कतें फ़िस्क़ हैं तुम मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ क्यूं बनते हो इन सब ह़-र-कतों से अ़लाह़िदा रहो ।

(3) इस से वोह फ़िर्क़ा इ़ब्रत पकड़े जो सह़ाबए किराम को

गालियां देना बेहतरीन इ़बादत समझता है जिस का अ़क़ीदा येह कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ عَنۡہُ को एक गाली देना अस्सी80 बरस की ख़ालिस इ़बादत से अफ़्ज़ल है। येह लोग इस आयत के हुक्म से ज़ालिम हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान)

(30) कुफ़्फ़ार से क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ का हुक्म

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌo

(पारह : 11, अत्तौबह : 114)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और इब्राहीम का अपने बाप की बख़्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब[1] जो उस से कर चुका था[2] फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वोह अल्लाह का दुशमन है[3] उस से तिन्का तोड़ दिया (ला तअ़ल्लुक़ हो गया)[4] बेशक इब्राहीम बहुत आहें करने वाला मु-तह़म्मिल है।[5]

तफ़्सीर :

(1) शाने नुज़ूल : ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह अपने मुश्रिक मां बाप के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर रहा है, आप ने उसे मन्अ़ फ़रमाया। उस ने अ़र्ज़ किया कि इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने भी अपने मुश्रिक चचा के लिये बख़्शिश की दुआ़ की थी سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّی ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह वाक़िआ़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया। इस पर येह आयते करीमा उतरी।

(2) या'नी इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने वालिद से दुआ़ए मग़्फ़िरत का वा'दा फ़रमाया था और येह वा'दा इस की मुमा-न-अ़त से पहले

हो चुका था। बा'द में मुश्रिकीन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत से मन्अ़ फ़रमाया गया। या उन के चचा ने ईमान का वा'दा किया तो आप ने दुआ़ का वा'दा किया। उस ने अपना वा'दा पूरा न किया। आप ने पूरा फ़रमाया।

(3) या इस त़रह़ कि आप पर वह़्य आ गई कि आज़र का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा या इस त़रह़ कि वोह कुफ़्र पर फ़ौत हो गया। तो आप ने उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमानी बन्द कर दी।

(4) इस त़रह़ कि दुआ़ए मग़्फ़िरत तर्क फ़रमा दी और दिल से मुतनफ़्फ़िर हो गए मा'लूम हुवा कि काफ़िर से नफ़रत चाहिये अगर्चे वोह अपना क़रीबी रिश्तेदार हो

(5) मा'लूम हुवा कि इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام मज़्हरे जमाल हैं कि दुशमन पर भी सख़्ती नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मज़्हरे जलाल हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान)

म-दनी माह़ोल अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिरकत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिर व शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

जोशीला मुबल्लिग़ :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 812 पर लिखते हैं :

आ़शिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला जहलम (पंजाब) के एक गाउं में 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ात़िर पहुंचा। जिस मस्जिद में क़ियाम था, उस के सामने वाले घर में रहने वाले एक नौ जवान पर एक आ़शिक़े रसूल ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाई वोह नौ जवान सिर्फ़ 2 दिन साथ रहने के लिये तय्यार हुए और म-दनी क़ाफ़िले वालों के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने में मस्रूफ़ हो गए। सिर्फ़ दो दिन म-दनी क़ाफ़िले में गुज़ारने की ब-र-कत से अपने घर में नमाज़ों की तल्क़ीन की। चूंकि घर के बा असर फ़र्द थे, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तक़रीबन सभी ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। बराबर में मामूं के घर जा कर भी नेकी की दा'वत पेश की। घर वालों को **T.V** की तबाह कारियां बता कर इसे घर से निकाला देने का ज़ेह्न दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बाहमी रिज़ा मन्दी से घर से **T.V** निकाल दिया गया। दूसरे दिन सुब्ह़ कपड़ों पर इस्तरी करते हुए अचानक उन्हें करन्ट लगा और उसी वक़्त उन्हों ने दम तोड़ दिया घर वालों का कहना है कि हम ने वाज़ेह़ त़ौर पर सुना कि वक़्ते वफ़ात उन की ज़बान पर कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जारी था।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका
मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : पेट का कुफ़्ले मदीना, जि. 1, स. 812)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इबादात व अख़्लाक़ियात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं । इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनता है । हम सब को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए कार्ड पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें ।

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा :

म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक

शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है
क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1135)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करने और हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मज्लिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة)

(1) करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात : (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िर्त़ासिद्राहिम) (कुल स-फ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल स-फ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल स-फ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल स-फ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल स-फ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल स-फ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल स-फ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल स-फ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल स-फ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल स-फ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल स-फ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुबः

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल स-फ़ह़ात : 74). (13) तम्हीदुल ईमान (कुल स-फ़ह़ात : 77). (14) अल इजाज़ातिल मतीनह (कुल स-फ़ह़ात : 62). (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल स-फ़ह़ात : 60). (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल स-फ़ह़ात : 46). (17) अजलिय्युल ए'लाम (कुल स-फ़ह़ात : 70). (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल स-फ़ह़ात : 93). (19) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी) (कुल स-फ़ह़ात : 570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(20) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल स-फ़ह़ात : 160) (21) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल स-फ़ह़ात : 200)

(22) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल स-फ़ह़ात : 33) (23) फ़िक्रे मदीना (कुल स-फ़ह़ात : 164)

(24) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल स-फ़ह़ात : 32) (25) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल स-फ़ह़ात : 39)

(26) जन्नत की दो चाबियां (कुल स-फ़ह़ात : 152) (27) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल स-फ़ह़ात : 43)

(28) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल स-फ़ह़ात : 196) (29) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल स-फ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(30) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल स-फ़ह़ात : 325)
(31) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल स-फ़ह़ात : 96)
(32) ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल स-फ़ह़ात : 50)
(33) तह्क़ीक़ात (कुल स-फ़ह़ात : 142)
(34) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल स-फ़ह़ात : 112)
(35) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल स-फ़ह़ात : 24)
(36) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल स-फ़ह़ात : 30)
(37) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल स-फ़ह़ात : 124)
(39) क़ब्र खुल गई (कुल स-फ़ह़ात : 48)
(39) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल स-फ़ह़ात : 275)
(40) टी वी और मूवी (कुल स-फ़ह़ात : 32)
(41 ता 47) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(48) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल स-फ़ह़ात : 24)
(49) ग़ौसे पाक رضی اللہ عنہ के ह़ालात (कुल स-फ़ह़ात :106)
(50) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल स-फ़ह़ात : 100)
(51) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल स-फ़ह़ात : 255)
(52) दा'वते इस्लामी की जेलखाना जात में खिदमात (कुल स-फ़ह़ात : 24)
(53) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल स-फ़ह़ात : 68)
(54) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल स-फ़ह़ात : 220)
(55) तरबिय्यते औलाद (कुल स-फ़ह़ात : 187)
(56) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल स-फ़ह़ात : 62)
(57) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल स-फ़ह़ात : 66)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(58) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल स-फ़ह़ात : 743)
(59) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल स-फ़ह़ात : 36)
(60) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़अशि'अ़तुल्लम्आ़तकुल स-फ़ह़ात : 74)
(61) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल स-फ़ह़ात : 102)
(62) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलदअशि'अ़तुल्लम्आ़तकुल स-फ़ह़ात : 64)
(63) अद्दा'वतु इलल फ़िक्र (कुल स-फ़ह़ात : 148)

शो'बए दर्सी कुतुब

(64) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल स-फ़ह़ात : 45)
(65) किताबुल अ़क़ाइद (कुल स-फ़ह़ात : 64)
(66) नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र (कुल स-फ़ह़ात : 175)
(67) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल स-फ़ह़ात : 121)
(68) निसाबुत्तजवीद (कुल स-फ़ह़ात : 79)
(69) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल स-फ़ह़ात : 180)
(70) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नह़्व

शो'बए तख़्रीज

(71) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल स-फ़ह़ात : 422)
(72) जन्नती ज़ेवर (कुल स-फ़ह़ात : 679)
(73 ता 77) बहारे शरीअ़त (पांच ह़िस्से)
(78) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल स-फ़ह़ात : 170)
(79) आईनए क़ियामत (कुल स-फ़ह़ात : 108)
(80) सह़ाबए किराम رضی اللہ عنہم का इ़श्क़े रसूल صلی اللہ علیہ وسلم (कुल स-फ़ह़ात : 274)

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ्हा नम्बर नोट फरमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक्की होगी।

उन्वान	सफ्हा	उन्वान	सफ्हा

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ *तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं हर जुमा'रात को शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास म-दनी मर्कज़ शाही मस्जिद में इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये* اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ *इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा हर इस्लामी भाई अपना येह म-दनी ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है* اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ *अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है* اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

क़ाबिले मुता-लआ किताब

आज ही तलब फ़रमाए

30 अह़ादीसे न-बवी और उन की मुख़्तसर वज़ाहत पर मुश्तमिल तालीफ़

अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद